Rajni Sekhri Sibal's

बंदर और सिकंदर

Illustration: Satyaraj Iyer

ALOK PRAKASHAN

ये कहानी बहुत पुरानी है । उस ज़माने की है जब बड़ी बड़ी दुकाने नहीं होती थी, शॉपिंग मॉल्स नहीं थे। अगर आपको कुछ खरीदना था तो अमेज़ॉन से नहीं खरीद सकते थे।

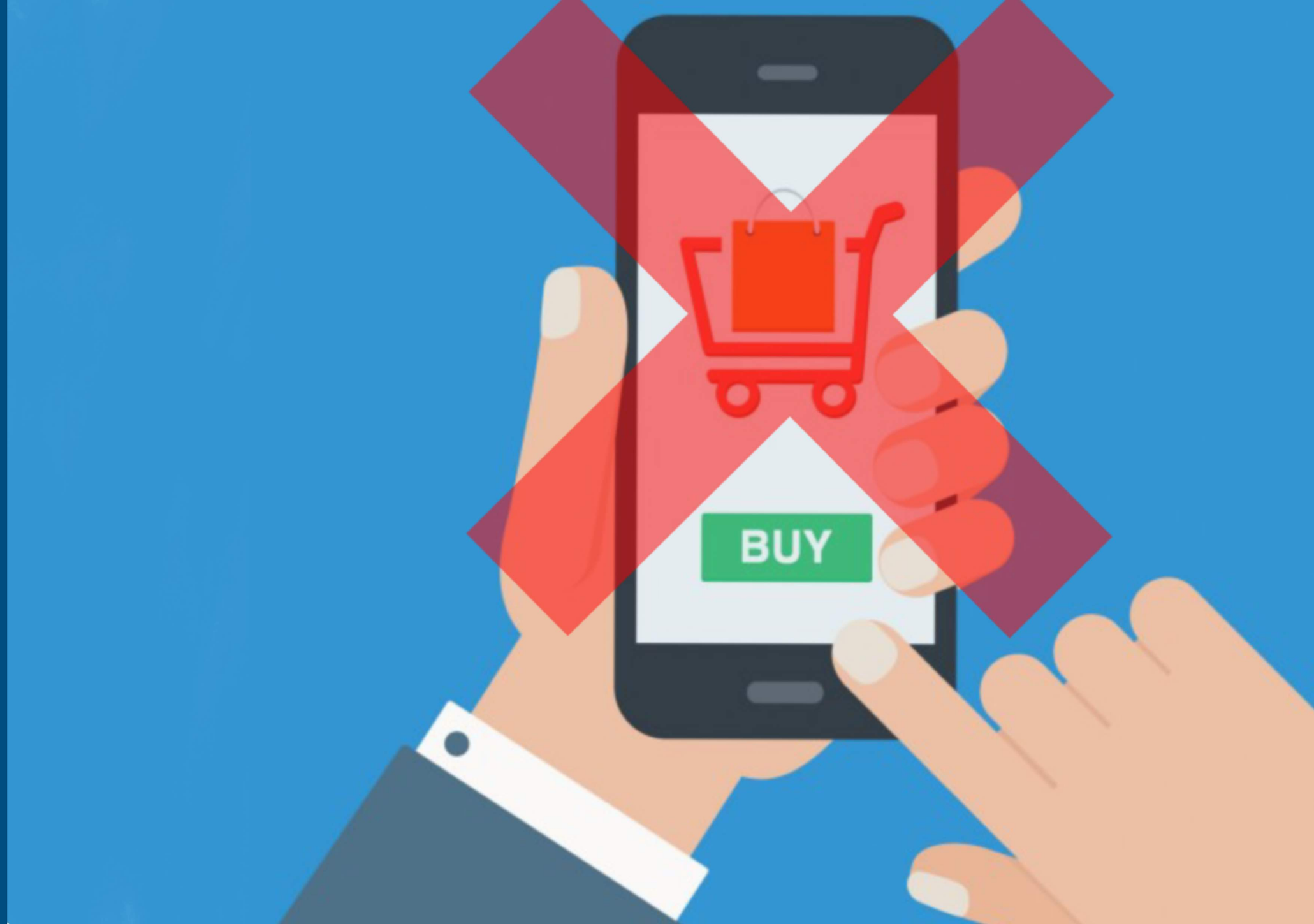

जितने विक्रेता थे - जिनको कुछ भी बेचना है: चाहे कपड़ा है, चाहे टोपी है, या फिर कुछ भी बेचना हो तो, वो अपने सर पर लाद कर फेरी लगाते थे। एक गांव से दूसरे गांव या दूसरे शहर जाते थे।

उस ज़माने में एक टोपी वाला था जिसका नाम था सिकंदर। सिकंदर सुई धागा लेकर, अपने हाथ से, बहुत खूबसूरत टोपियां बनाता था। सब रंगों की टोपियाँ लाल, पीली, नीली, जामुनी, हरी, सतरंगी और सफ़ेद कभी कभी टोपी के ऊपर कढ़ाई करके बहुत खूबसूरत सूती, ऊनी, सिल्क आर मखमल की भी टोपियां बनाता था।

और बेचने के लिए एक गांव से दूसरे गांव फेरी लगाने जाता था।

एक दिन अपनी गठरी बांध कर अपने सर पर लाद कर मोहनपुर की तरफ चल पड़ा। अब मोहनपुर पहुँचने के लिए रास्ते में एक बहुत घना जंगल था। जंगल के बाहर एक कुटिया थी जहां एक आदमी रहता था

उस आदमी ने सिकंदर को रोका और कहा: तुम कहाँ जा रहे हो? इस जंगल से मत जाओ। यहाँ बहुत भयानक जानवर रहते हैं। तुम जंगल से न होकर, उस पगडंडी वाले रास्ते से जाओ मोहनपुर। रास्ता थोड़ा लंबा है। थोड़ा ज्यादा समय लग जायेगा लेकिन जानवरों से बच जाओगे।

सिकंदर ने कुछ देर सोचा और फिर कहा: शेर है क्या? बब्बर शेर है क्या इस जंगल में?

न-न-न शेर नहीं है, लेकिन उससे भी भयानक जानवर है - बहुत सारे है।' उस आदमी ने कहा।

भला शेर से भी भयानक कौन सा जानवर हो सकता है?' सिकंदर ने हैरानी से पूछा।

तो उस आदमी ने कहा: ‘अरे भाई! ये जंगल बंदरो से भरा है और इतने बदमाश बन्दर है तुम्हे क्या बताये। वो तो जीना हराम कर देते है। हम लोग तो कभी जंगल के भीतर नहीं जाते। कोई भी नहीं जाता इस जंगल में।’

सिकंदर जोर-जोर से हँसने लगा – ‘अरे भाई! बन्दर से क्या डरना? मैं नहीं डरता बन्दर से।’

सिकंदर जंगल के भीतर चल पड़ा । अब चलते-चलते उसने देखा कि जंगल तो वाकई बहुत घना है । थोड़ी देर बाद जब वो थक गया तो एक बहुत बड़े पेड़ के नीचे जाकर बैठ गया। दो रोटियां, जो उसके बीवी ने उसको दी थी, उसको खाने लगा।

रोटी खाकर थोड़ी सी आँख लग गयी, तो नींद आ गयी और वो सो गया।

अब सिकंदर को पता नहीं था कि जिस पेड़ के नीचे वो सोया हुआ था, वो पेड़ बंदरो से भरा हुआ था। जैसे ही सिकंदर की आँख लगी, सबसे बड़ा बन्दर पेड़ से उतरा और उसके पीछे छोटे-छोटे बाकि के बन्दर भी आ गए। फिर सब बंदरो ने उस की गठरी को खोला।

गठरी में देख के हैरान हो ग ए , कि त नी खूबसूरत टोपियां थी - ला ल , पी ली , ह री , नीली। सब बंदरो ने एक- एक टोपी उठाकर सर पर पहन ली। कुछ ने तो दो टोपियां उठा ली, एक सर के लिए और एक पूछ के लिए।

टोपियाँ पहन कर सब बन्दर पेड़ पर चढ़कर जोर-जोर से हँसने लगे, ताली मारने लगे और एक दूसरे को आवाज देने लगे।

‘बन्दर मामा पहन पजामा,
सर पर टोपी, किया हंगामा।’

जैसे ही बंदरो का शोर सुना, सिकंदर की आँख खुल गयी और उसने उठ कर देखा- **‘ओहो! मेरी गठरी तो खाली है, मैं तो लुट गया।’**

जब पेड़ पर नज़र पड़ी तो उसने देखा की सभी बन्दर ऊपर बैठे है और बड़े मजे से हँस-हँस के ताली मार रहे है। किसी के सर पर लाल टोपी थी, किसी के मखमली, किसी के सर पर पीले रंग की। बड़े मजे से टोपियां पहन कर सब बंदर, एक टहनी से दूसरे टहनी पर कूद कर, गाना गा रहे थे -

बन्दर मामा बन्दर मामा

सर पर टोपी, किया हंगामा।

बन्दर मामा पहन पजामा,

सर पर टोपी, किया हंगामा।

अब बेचारा सिकंदर, उसके तो पूरे महीने की मेहनत बंदरों के सर पर थी पूरा महीना लगाकर उसने इतनी सारी टोपियां बनाई थी। तो सोच में बैठ गया और उसको थोड़ा रोना भी आया कि मैं क्या करूँ?

तो फिर उसको लगा कि भई रोने से तो कभी जिंदगी में कुछ नहीं मिला, अगर कोई गलत काम करता है तो फिर उसका हल ढूंढना चाहिए चुपचाप बैठने से कुछ नहीं होगा।

तो उसने पत्थर उठा कर कहा कि ‘मैं बन्दर के ऊपर फेंकता हूँ, एक पत्थर लगेगा तो सभी फेंक देंगे मेरी टोपियां नीचे।’

जैसे ही पत्थर उठाया तो ध्यान आया कि ‘ओहो! ये तो नकलची बन्दर है। बन्दर के सामने जो कुछ करो, बन्दर तो उसी की नक़ल उतारते है। अगर मैं एक पत्थर फेंकूँगा तो पचास किस्म के मेरे ऊपर पत्थर, लड़कियाँ , फल, क्या-क्या फेकेंगे मेरे ऊपर। मेरे को तो मार ही देंगे जान से।’

सिकंदर सोच में पड़ गया, ‘अब क्या करूँ?’

अपने सर पर हाथ रखते ही सिकंदर को ध्यान आया कि ‘ओहो! मैं ने खुद तो अभी भी टोपी पहनी हुई है।’ सिकंदर ने अपनी टोपी उतारी तो देखा कि, पेड़ के ऊपर भी एक बन्दर ने टोपी अपनी उतार ली। उसने फिर से टोपी पहन ली, तो बन्दर ने भी फिर से पहन ली। सिकंदर ने क्या किया कि अपनी टोपी उतारी और पट्टाक से जमीन पर फेंकी और हँसने लगा। फिर टोपी सर पर रखी। फिर उतारी और पट्टाक से फिर से जमीन पर फेंकी, और फिर जोर से हँसने लगा।

अब पेड़ पर जितने बन्दर थे उन्होंने जब ये देखा तो बोले कि – **'ये तो बहुत कमाल का खेल है।'**

सबसे बड़े बन्दर ने अपनी भी टोपी उतार कर पट्टाक से जमीन पर फेंकी। उसको देखकर उसकी पत्नी ने भी अपनी लाल रंग की टोपी उतारी और नीचे फेंक दी । जितने छोटे बन्दर थे उन्होंने भी अपनी लाल, पीली, हरी, नीली सब टोपियां उतारी और नीचे फेंक दी। धीरे-धीरे सभी बंदरो ने अपनी-अपनी टोपियां सर पर से और पूंछ पर से भी उतार दी। जो छुपा रखी थी वो भी उतार कर जोर से नीचे जमीन पर फेंक दी।

फिर सभी बंदर जोर से हँसने लगे कि – **‘ये तो बड़ा मज़ेदार खेल है, देखो कितने ज़ोर से आवाज आती है।’**

बन्दर ठहाके लागकर हँस ही रहे थे की सिकंदर ने झटपट ज़मीन से सारी टोपियां उठाई, पोटली में डाली और अपने पोटली बांध के सर पर रख कर निकल पड़ा।

पीछे मुड़कर सिकंदर जोर से हँसा और बोला :

‘अरे भई! जो है नकलची वो है बन्दर, और जो जीता वो सिकंदर’

बंदरो को समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या हुआ। जब तक बात समझ में आयी तो, सिकंदर जंगल से बाहर निकल चुका था।

फिर तो सभी बंदरो ने एक दूसरे को देखा और कुछ रो कर और कुछ गा कर बोले –

‘हम तो ठहरे नकलची बन्दर,
टोपी वाला बना सिकंदर,
हम तो ठहरे नकलची बन्दर’
टोपी वाला बना सिकंदर ।

Rajni Sekhri Sibal is an Indian Administrative Officer of the Haryana cadre who has recently superannuated as Secretary, Government of India. She is of the 1986 Batch and is the first lady to have topped the All India Civil Service Examinations. She is the recipient of the Indian of the Year 2013 Award in the category 'Unsung Hero' for her courage and commitment.

In her last assignment with Government of India, Rajni was posted as the first Secretary of the recently created Ministry of Fisheries prior to which she worked as Additional Secretary, Ministry of Home Affairs, Government of India, and Additional Secretary, Ministry of Skill Development and Entrepreneurship. In a previous assignments Rajni worked as a Joint Secretary in the Ministry of Agriculture and Director Health Insurance Max India as well as in the Government of Haryana.

Rajni holds a Master's degree in Psychology as well as Economics and has authored several books: *'Tools for Monitoring'; 'Clouds End and Beyond'*; an anthology of verses; *'Kamadhenu'*; *'Fragrant Words'* – an anthology; *'Are You Prepared for a Disaster?'* – a book on Disaster Risk Reduction; as well as *'The Haunting Himalayas'*.

rajnisekhrisibal@gmail.com